B.A. I P-I

COURSE CODE:2.010

बी0ए0 प्रथम वर्ष हिन्दी

प्रथम प्रश्नपत्र – प्राचीन काव्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ्यक्रम का उद्देश्य है – छात्राओं को हिन्दी के प्राचीन कवियों के काव्य, परम्परा एवं उनके मूल्यों से परिचित कराना।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(क) प्राचीन काव्य के पाठ्यक्रम से छात्रायें हिन्दी साहित्य के स्वर्णयुग से परिचित हुई।

(ख) स्वर्णयुग के कवियों से परिचित होकर छात्राओं ने जाना कि जीवन में अनुशासन एवं संयम का क्या महत्व है, जिसका कि छात्राओं के वर्तमान एवं भविष्य निर्माण में बहुत महत्व है।

(ग) छात्रायें हिन्दी की विविध बोलियों से परिचित हुई। जैसे – अवधी, ब्रज इत्यादि।

(घ) छात्राओं ने प्राचीन साहित्य की विविध शैलियों को जाना।

(ड.) इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रायें तत्कालीन समाज और इतिहास से परिचित हुई।

(च) इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं ने जिस समाजवादी दर्शन को प्राप्त किया उसका उपयोग वे अपने वर्तमान एवं भविष्य में करके स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान दे सकती है।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं का नैतिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक चेतना का विकास हुआ।

2. प्रश्नोत्तर विधि, सामूहिक वार्ता।

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

प्राचीन काव्यांजलि —सम्पादक, डॉ0 नीलिमा शाह

5. सहायक पुस्तक का नाम :

1. कबीर – आ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी

   प्रकाशक – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

2. हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि – द्वारिका प्रसाद सक्सेना

बी0ए0 प्रथम वर्ष हिन्दी

द्वितीय प्रश्नपत्र –उपन्यास कहानी एवं निबन्ध

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में उपन्यास कहानी एवं निबन्ध लेखन की कलात्मक एवं व्यवसायिक क्षमता का विकास करना।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(क) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं ने खड़ी बोली हिन्दी के ऐतिहासिक स्वरूप को जाना।

(ख) निबन्धों के माध्यम से छात्राओं में वैचारिक क्षमता का सुसंगठित विकास हुआ।

(ग) कहानी कला के माध्यम से छात्राओं में कला लेखन की अभिरूचि उत्पन्न हुई।

(घ) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के विविध कथात्मक प्रसंगों के द्वारा छात्राओं में जीवन के विभिन्न घातो–प्रतिघातों को जानने समझने और निराकरण करने की व्यवहारिक शक्ति और क्षमता उत्पन्न हुई।

(ड.) इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में कलात्मक अभिरूचि का विकास हुआ।

(च) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में लेखकीय क्षमता उत्पन्न हुई।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में लेखकीय कौशल का विकास हुआ, इसके साथ ही छात्राओं में भावनात्मक एवं वैचारिक प्रबन्धन की क्षमता सुसंगठित हुई।

2. गृहकार्य, वाद–विवाद

4. पाठ्य पुस्तक का नाम :

1. गबन – प्रेमचन्द
2. कथाकुंज – डॉ0 नीलिमा शाह
3. सात निबन्ध – डॉ0 नीलिमा शाह

5. सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी उपन्यास – डॉ0 शिवनारायण श्रीवास्तव
2. हिन्दी गद्य, विन्यास और विकास – डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी

B.A. II P-I

COURSE CODE:2.030

बी0ए0 द्वितीय वर्ष हिन्दी

प्रथम प्रश्नपत्र –अर्वाचीन हिन्दी काव्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

मैथिलीशरण गुप्त से लेकर छायावाद के प्रतिनिधि कवियों एवं राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि दिनकर के काव्य साहित्य से छात्राओं को अवगत कराना है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(क) राष्ट्रीय चेतना से छात्राएं परिचित हुई।

(ख) छायावादी कवियों के माध्यम से छात्राओं में कल्पनाशीलता का विकास हुआ।

(ग) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं के भीतर राष्ट्रभक्ति का संगठनात्मक विकास किया गया।

(घ) पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में काव्यात्मक क्षमता का विकास हुआ जिसका उपयोग छात्राएं अपने जीवन में कर सकती हैं।

(ड.) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राएं आधुनिक हिन्दी भाषा की विविध शैलियों से परिचित हुई और इसका उपयोग वे अपने सर्जनात्मक कौशल में कर सकती हैं।

(च) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में जो संवेदानात्मक क्षमता उत्पन्न हुई उसका उपयोग वे अपनी रचनात्मकता में कर सकती हैं।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. छात्राओं में रचनात्मक कौशल का विकास हुआ।

2. प्रश्नोत्तर विधि एवं सामूहिक वार्ता।

4. पाठ्यपुस्तक का नाम :

अर्वाचीन काव्य – डॉ0 नीलिमा शाह

5. सहायक ग्रन्थ :

1. छायावाद – डॉ0 नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन।

2. पंत, प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त – रामधारी सिंह 'दिनकर'

B.A. II P-II

COURSE CODE:2.040

बी0ए0 द्वितीय वर्ष हिन्दी

द्वितीय प्रश्नपत्र –एकांकी तथा नवीन गद्य विधायें

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं के भीतर नाटक, एकांकी एवं हिन्दी गद्य की विविध विधाओं जैसे संस्मरण, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज आदि के माध्यम से रचनात्मक कौशल को उत्पन्न करना है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(क) छात्राओं में रंगमंचीय क्षमताओं का विकास हुआ।

(ख) छात्राओं में अभिनय की अभिरूचि जागृत हुई।

(ग) छात्राओं ने अपने जीवन के संस्मरणों को लिखना आरम्भ किया।

(घ) पाठ्यक्रम के माध्यम से पर्यटन की प्रवृत्ति जागृत हुई।

(ड.) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं में साहित्य की विविध विधाओं को लिखने का रचनात्मक कौशल उत्पन्न हुआ।

(च) शैलीगत विविधता के अध्ययन के कारण उनकी भाषा शैली सशक्त हुई।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में रचनात्मक कौशल का विकास हुआ। इस क्षमता का उपयोग छात्राएं अपने भविष्य में निश्चित रूप से कर सकती है।

2. गृहकार्य एवं वाद–विवाद।

4. पाठ्यपुस्तक का नाम :

1. आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश।

2. एकांकी संकलन – डॉ0 नीलिमा शाह

3. गद्य विविधा – डॉ0 नीलिमा शाह

5. सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी नाटक : डॉ0 बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन।

2. हिन्दी गद्य : विन्यास और विकास – डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी,

लोक भारती प्रकाशन।

B.A. III P-I

COURSE CODE:2.050

बी0ए0 तृतीय वर्ष हिन्दी

प्रथम प्रश्नपत्र –छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

छायावादोत्तर काव्य का उद्देश्य छात्राओं को हिन्दी के विकास में एक नए युग से परिचित कराना है। छायावाद युग के पश्चात् प्रगतिवाद और प्रयोग का विकास हुआ, जो मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित था। इसी विचारधारा से प्रेरित होकर हिन्दी के कवियों ने जो कविताएं लिखी, उसी से अवगत कराना मुख्य उद्देश्य है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(क) छायावादोत्तर काव्य के पाठ्यक्रम से छात्राएं परिचित हुई।

(ख) प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की अलग–अलग विशेषताओं से छात्राओं को परिचित कराया गया।

(ग) मार्क्सवादी सिद्धान्त जो अमीरी – गरीबी की अलग–अलग व्याख्या करता है, छात्राएं अवगत हुई।

(घ) अज्ञेय, नागार्जुन, केदारनाथ, अग्रवाल और धूमिल जैसे महान कवियों के जीवन से छात्राओं का ज्ञान बढ़ाया गया।

(ड.) इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी भाषा की विभिन्न शैलियों में रचना करने की रचनात्मक ऊर्जा की क्षमता को विकसित कराया गया।

(च) पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में काव्यात्मक क्षमता उत्पन्न हुई और इसका उपयोग छात्राएं व्यावहारिक जीवन में कर सकती है।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक चेतना का विकास हुआ।

2. गृहकार्य एवं कक्ष परीक्षण के द्वारा छात्राओं का ज्ञान बढ़ाया गया।

4. पाठ्यपुस्तक का नाम :

1. छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

5. सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. हिन्दी नवगीत का संक्षिप्त इतिहास – डॉ0 अवधेश नारायण
2. कविता के प्रतिमान –डॉ0 नामवर सिंह
3. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास –डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन

B.A. III P-II

COURSE CODE:2.060

बी0ए0 तृतीय वर्ष हिन्दी

द्वितीय प्रश्नपत्र –हिन्दी भाषा, साहित्य तथा पत्रकारिता का इतिहास

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं को हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास का ज्ञान प्राप्त कराना है। इसके साथ ही हिन्दी विभिन्न बोलियों एवं देवनागरी लिपि की विशेषताओं का व्यावहारिक ज्ञान देना है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(क) छात्राओं को राजभाषा हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्थिति और संभावनाओं का व्यावहारिक ज्ञान हुआ।

(ख) छात्राओं ने अपनी लेखनी में लिपि संबंधी त्रुटियों को जाना और उसे दूर किया।

(ग) हिन्दी साहित्य के समग्र इतिहास को छात्राओं ने क्रमबद्ध रूप में जाना।

(घ) विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए इतिहास का क्रमबद्ध ज्ञान अत्यन्त उपयोगी और सहायक सिद्ध होगा।

(ड.) प्रस्तुत पाठ्यक्रम द्वारा छात्राओं ने पत्रकारिता के स्वरूप, कार्य और उसके क्षेत्र से अवगत हुई।

(च) छात्राओं में पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने की अभिरूचि जागृत हुई।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं में हिन्दी भाषा और लिपि संबंधी ज्ञान का संवर्द्धन किया गया, लिपि संबंधी त्रुटियां दूर की गयी। इसके साथ ही छात्राएं पत्रकारिता के व्यवसाय से जुड़ने के लिए प्रेरित हुईं।

2. समूह वार्ता, प्रश्नोत्तर, प्रस्तुतिकरण के द्वारा छात्राओं का मूल्यांकन किया गया।

4. पाठ्यपुस्तक का नाम :

1. भाषा विज्ञान : डॉ0 भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी पत्रकारिता : डॉ0 अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

5. सहायक पुस्तक :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. हिन्दी पत्रकारिता : डॉ0 कृष्णबिहारी मिश्र

B.A. III P-III

COURSE CODE:2.070

बी0ए0 तृतीय वर्ष हिन्दी

तृतीय प्रश्नपत्र –प्रयोजन मूलक हिन्दी तथा काव्यांग विवेचन

1. पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

छात्राओं को रोजगारपरक शिक्षा देने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम की संरचना की गयी है।

2. पाठ्यक्रम का परिणाम :

(क) प्रयोजनमूलक हिन्दी, संचार भाषा हिन्दी के द्वारा व्यावसायिक क्षेत्रों की ओर उन्मुख होने की संभावना बढ़ जाती है।

(ख) प्रस्तुत पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं ने व्यापारिक पत्रों की रूपरेखा को समझा तथा विभिन्न पत्रों को (व्यापारिक) लिखने में सिद्धहस्थ हुईं।

(ग) रोजगार की विभिन्न दिशाओं के लिए (लेखक, अनुवादक, दुभाषिया) छात्राओं की बौद्धिक और भाषा क्षमता का विकास और विस्तार हुआ।

(घ) पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं ने समाचार के स्वरूप और संरचना को जाना और सीखा।

(ड.) समाचार लिखने की कला–कौशल निपुण हुईं।

(च) एक सफल पत्रकार बनने की रूझान या अभिवृत्ति का विकास हुआ।

3. पाठ्यक्रम का मूल्यांकन :

1. पाठ्यक्रम द्वारा रोजगारपरक उद्देश्यों की पूर्ति की गयी है।

2. समूह वार्ता, प्रस्तुतिकरण, प्रश्नोत्तर के द्वारा छात्राओं का मूल्यांकन किया गया।

4. पाठ्यपुस्तक का नाम :

1. व्यावहारिक एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी तथा काव्यांग विवेचन – डॉ0 नीलिमा शाह

5. सहायक ग्रन्थ :

1. समाचार संकलन और लेखन – डॉ0 नन्दकिशोर, हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. अनुवाद विज्ञान – डॉ0 भोलानाथ तिवारी
3. पत्रकारिता के विविध सन्दर्भ – डॉ0 वंशीधर लाल, अनुपम प्रकाशन, पटना।